अध्याय 26

आशीष और शाप

दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व प्राचीन मध्य पूर्व में, एक बड़ी शक्ति (अधिपति) और छोटी शक्ति (अधीन राज्य) के बीच संधि ने एक ने आम तौर पर एक रूप ले लिया था। (1) वे उस महान राजा के नाम और पहचान से आरम्भ करते थे जिसने अपने अधीन राज्य के साथ संधि/ वाचा का प्रस्ताव दिया था। (2) इसके बाद वे वाचा के दोनों पक्षों के बीच के इतिहास को दोहराते थे। (3) वे इसमें वे शर्तें - आवश्यकताएं भी रखते थे जिसे छोटी शक्ति को पूरा करना पड़ता था। (4) वे आशीषों और शापों की घोषणा भी करते थे, जिसमें यह स्पष्ट होता था कि किस प्रकार संधि का प्राप्त करने वाला (छोटी शक्ति) यदि उन आवश्यकताओं को पूरा करने पर आशीष प्राप्त करेगा, और यदि वह इनका पालन न करे, तो किस प्रकार उसे शाप मिलेगा, या दण्ड दिया जाएगा।[1]

जो वाचा परमेश्वर ने सीनै पर अपने लोगों से बाँधी (जब उसने उन्हें व्यवस्था दी) वह अधिपति और अधीन राज्य की संधि के समान थी। निर्गमन 19 और 20 में, यहोवा ने इस्राएल का महान राजा होने के लिए अपना नाम दिया और अपनी योग्यताएं भी दीं। इसके बाद उसने इस्राएल को दो पक्षों के बीच का पिछला इतिहास स्मरण करवाया: उसने इस्राएल को मिस्र के दासत्व से छुड़ाकर बाहर निकाला था। निर्गमन और लैव्यव्यवस्था में परमेश्वर ने संधि/ वाचा की नींव रखी - वे आज्ञाएं और नियम जिनका पालन इस्राएल को करना था। उसने लैव्यव्यवस्था 26 में उन आशीषों और शापों की सूची बताने के साथ वाचा के प्रकाशन को उत्कर्ष पर पहुँचाया जो इस्राएल के उन शर्तों के पालन करने/और उनका पालन करने में विफल रहने के कारण आएंगे।

लैव्यव्यवस्था 26 अध्याय 1 से लेकर 25 तक पाए जाने वाले नियमों के लिए एक सटीक निष्कर्ष का कार्य करता है। यह इस्राएलियों के लिए उन नियमों को पूरा करने के दो अच्छे कारण देता है जो परमेश्वर ने दिए थे: यदि वे उनका पालन करें, तो आशीषित होंगे, यदि वे उनका पालन करें तो श्रापित ठहरेंगे।

वाचा की मूल आवश्यकताएँ (26:1, 2)

[1]"तुम अपने लिये मूरतें न बनाना, और न कोई खुदी हुई मूर्ति या लाट अपने लिये खड़ी करना, और न अपने देश में दण्डवत् करने के लिये नक्काशीदार पत्थर स्थापित करना; क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। [2]तुम मेरे विश्रामदिनों का

पालन करना और मेरे पवित्रस्थान का भय मानना; मैं यहोवा हूँ।"

यहोवा ने वाचा से जुड़े हुए प्रतिफलों और दण्डों के विषय में अपना संदेश आरम्भ करने से पहले, इस्राएल को वाचा की मूल आवश्यकताएँ स्मरण करवाईं।

आयतें 1, 2. इन आयतों पिछले पच्चीस अध्यायों में पाई जाने वाली विधियों को सारांशित करते हुए देखा जा सकता है। परमेश्वर को अपने लोगों से क्या आवश्यकता थी?

इस्राएलियों को, पहली दो आज्ञाओं के अनुसार, मूर्तिपूजा का तिरस्कार करना था, और केवल परमेश्वर की आराधना करनी थी। उन्हें ये सुनिश्चित करना था कि वे (1) कोई **मूर्तियाँ** न बनाएं, (2) खुदी हुए **मूर्ति** की आराधना न करे, (3) और किसी भी **लाट** या **नक्काशीदार** पत्थर के आगे **दण्डवत्** करने से इनकार करें। इस प्रकार की मूर्तिपूजा की पद्धतियाँ सम्पूर्ण कनान और प्राचीन मध्य पूर्व में व्यापक रूप से फैली हुई थीं। इस्राएल का मुख्य अन्तर यह था कि उसके लोग कनान के निवासियों और उसके चारों और के देशों के लोगों के समान अन्यजातियों के देवताओं की उपासना न करें। अपने लोगों के को यह स्मरण करवाने के द्वारा कि उन्हें अपनी पूरी निष्ठा उसे ही प्रदान करनी थी, यहोवा ने उनके पवित्र बनने पर बल दिया जैसा कि वह स्वयं पवित्र हैं। उनसे आशा की गई थी कि वे अपने साथी भाइयों के से प्रेम का प्रदर्शन करते समय शुद्ध और नैतिक जीवन का नेतृत्व करें।

इन लोगों को (यहोवा के) **सब्त** का पालन भी करना था और (उसके) **पवित्रस्थान** का सम्मान भी करना था। सम्भवतः, यहोवा की मंशा इस आज्ञा में उन सभी आवश्यकताओं को सम्मिलित करना थी जो लैव्यव्यवस्था में निवासस्थान, आराधना, और बलिदान के सम्बन्ध में पाई जाती हैं। इसमें अध्याय 23 से 25 तक परमेश्वर के सभी विशेष समयों का पालन करना भी सम्मिलित होगा।

परमेश्वर ने अपने वचन के महत्व पर, दोबारा यह कहकर बल दिया कि, **मैं यहोवा हूँ।**

आशीषें (26:3-13)

उसकी आज्ञाओं को मानने के प्रोत्साहन के रूप में (26:1, 2), यदि इस्राएल आज्ञा पालन करे तो यहोवा ने अद्भुत आशीषों के चार समूहों की प्रतिज्ञा की।

1. भरपूर उपज (26:3-5)

3"यदि तुम मेरी विधियों पर चलो और मेरी आज्ञाओं को मानकर उनका पालन करो, 4तो मैं तुम्हारे लिये समय समय पर मेंह बरसाऊँगा, तथा भूमि अपनी उपज उपजाएगी, और मैदान के वृक्ष अपने अपने फल दिया करेंगे; 5यहाँ तक कि तुम दाख तोड़ने के समय भी दावनी करते रहोगे, और बोने के समय भी भर पेट दाख तोड़ते रहोगे, और तुम मनमानी रोटी खाया करोगे, और अपने देश में निश्चिन्त

बसे रहोगे।"

आयत 3. आशीषों पर यह भाग इस्राएलियों की ज़िम्मेदारियों के विषय में यहोवा के अनुस्मारक के साथ आरम्भ होता है: उन्हें उसकी **विधियों पर चलना** था और (उसकी) **आज्ञाओं का पालन करना** था। परमेश्वर की मंशा थी कि उसकी आज्ञाओं का पालन किया जाए।

आयतें 4, 5. यहोवा ने प्रतिज्ञा की और कहा कि यदि इस्राएल उसकी आज्ञा का पालन करे, तो वे भरपूर उपज का आनन्द उठाएंगे। परमेश्वर **वर्षा** को भेजेगा ताकि फसलें खेत में बढ़ें और दाखलताओं और **वृक्षों** पर फल लगें। कटनी किया गया अनाज इतना अधिक होगा कि इसकी **दावनी** वसंत ऋतु में इसके काटे जाने से लेकर गर्मी के अन्त में **दाख तोड़ने** के समय तक होती रहेगी। इसके साथ ही, दाख भी इतनी अधिक होगी कि ये पतझड़ ऋतु में अनाज बोने के **समय** तक तोड़ी जाती रहेंगी! इन बहुतायत की फसलों के द्वारा, उनके पास **खाने** के लिए भरपूर **भोजन**[2] **रहेगा**; और वे (अपने) **देश** में सुरक्षा पूर्वक बसे रहेंगे। उनके कृषि आधारित समाज में बहुतायत की वर्षा और अच्छे मौसम का परिणाम उत्तम उपज थी, जो बदले में, सुरक्षा लेकर आती थी।

2. एक शान्तिपूर्ण अस्तित्व (26:6-8)

[6]"और मैं तुम्हारे देश में सुख चैन दूँगा, और तुम सोओगे और तुम्हारा कोई डरानेवाला न होगा; और मैं उस देश में दुष्ट जन्तुओं को न रहने दूँगा, और तलवार तुम्हारे देश में न चलेगी। [7]और तुम अपने शत्रुओं को मार भगाओगे, और वे तुम्हारी तलवार से मारे जाएँगे। [8]तुम में से पाँच मनुष्य सौ को और सौ मनुष्य दस हज़ार को खदेड़ेंगे; और तुम्हारे शत्रु तलवार से तुम्हारे आगे आगे मारे जाएँगे।"

आयतें 6-8. यहोवा ने इसके बाद अपने लोगों से प्रतिज्ञा की और कहा कि वे शान्ति की आशीष का अनुभव करेंगे। वे अपने देश में निडरता से रहने पाएंगे। कैसे? यहोवा ने कहा वह **हानिकारक जन्तुओं को नष्ट कर देगा**। उदाहरण के लिए, देश में शेरों का साम्राज्य नहीं होगा। इसके साथ ही, उसने यह प्रतिज्ञा भी की और कहा कि **उस देश में तलवार न चलेगी**, स्पष्ट तौर पर इसका अर्थ है कि सम्पूर्ण तौर पर लोग युद्ध की तलवार से चेतावनी नहीं पाएंगे या उसके द्वारा घायल नहीं होंगे (26:6)।

लोगों को तलवार का भय नहीं होगा क्योंकि इस्राएल के योद्धा उनके विरुद्ध आने वाली शत्रु की सेना को आसानी से हरा देंगे। इस्राएली अपने **शत्रुओं** का पीछा करेंगे और उन्हें **अपनी तलवार से मार** भगायेंगे (26:7)। वास्तव में, इस्राएल के **पाँच** मनुष्य **सौ** को और, एक **सौ** इस्राएली योद्धा **दस हज़ार** शत्रु सैनिकों को हरा सकेंगे (26:8)! परमेश्वर इस्राएल को युद्ध के समय इतनी आशीष देगा कि उनके सामने कोई खड़ा न हो सकेगा। परमेश्वर की आशीष का परिणाम यह होगा कि देश शान्ति से रह सकेगा।

3. एक बढ़ने वाली जनसंख्या (26:9, 10)

9"और मैं तुम्हारी ओर कृपा दृष्टि रखूँगा और तुम को फलवन्त करूँगा और बढ़ाऊँगा, और तुम्हारे संग अपनी वाचा को पूर्ण करूँगा। 10और तुम रखे हुए पुराने अनाज को खाओगे, और नये के रहते भी पुराने को निकालोगे।"

आयतें 9, 10. यहोवा ने उसके लोगों से यह प्रतिज्ञा भी की और कहा कि, यदि वे उसकी आज्ञाओं का पालन करेंगे तो, वह उन्हें फलवन्त करेगा और भरपूर भोजन की आशीष देगा। जब उसने यह प्रतिज्ञा की, **मैं ... तुम को फलवन्त करूँगा और बढ़ाऊँगा**, तो इस्राएलियों को निश्चित तौर पर वे प्रतिज्ञाएं स्मरण आई होंगी जो उसने शताब्दियों पहले अब्राहम से की थीं (उत्पत्ति 12:2; 17:6; 22:17)। जो परमेश्वर ने अब्राहम के साथ किया था, उसने वही करने की प्रतिज्ञा उन अब लोगों से की थी। यह आशीष उस **वाचा** के अनुसार थी जो उसने इस्राएल के साथ बाँधी थी।

इस बढ़ती हुई जनसंख्या को जीवित रखने के लिए, परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की और कहा कि वे पिछली उपज के (**पुराने**) अनाज को **खाएंगे**; और भोजन के इस **भण्डार** के समाप्त होने से पहले ही, उसे अभी की फसल (**नई**) के लिए स्थान बनाने के लिए अलग हटाना पड़ेगा।[3] खाने के लिए सदैव भरपूर भोजन रहेगा।

4. परमेश्वर की उपस्थिति (26:11-13)

11"और मैं तुम्हारे बीच अपना निवास-स्थान बनाए रखूँगा, और मेरा जी तुम से घृणा नहीं करेगा। 12और मैं तुम्हारे मध्य चला फिरा करूँगा, और तुम्हारा परमेश्वर बना रहूँगा, और तुम मेरी प्रजा बने रहोगे। 13मैं तो तुम्हारा वह परमेश्वर यहोवा हूँ, जो तुम को मिस्र देश से इसलिये निकाल ले आया कि तुम मिस्रियों के दास न बने रहो; और मैं ने तुम्हारे जूए को तोड़ डाला है, और तुम को सीधा खड़ा करके चलाया है।"

आयतें 11-13. अन्त में, यहोवा ने यह प्रतिज्ञा की और कहा कि, यदि इस्राएल उसकी आज्ञा का पालन करे, तो वह अपने लोगों के मध्य वास करेगा। वह उनसे **घृणा** (तिरस्कार)[4] नहीं करेगा, बल्कि उनके **मध्य चला फिरा** करेगा। वह उनका **परमेश्वर** होगा, और वे उसके **लोग** ठहरेंगे (26:11, 12)। यह अन्तिम आशीष सबसे उत्तम आशीष थी जो परमेश्वर दे सकता था: वह इस्राएल के संग रहेगा! उसकी उपस्थिति उन्हें आशीष देगी।

इस्राएल को आशीष देने के उद्देश्य से, और इस बात के प्रमाण के रूप में कि जो प्रतिज्ञा उसने की थी वह उसे पूरा करने में सक्षम था, परमेश्वर ने उस बात का उल्लेख किया जो उसने पहले कही थी: उसने उन्हें **मिस्र** में दासत्व से छुटकारा दिया था! यदि इसे उदाहरण के तौर पर बताएं तो, उन्हें मिस्र से बाहर निकालने के द्वारा, परमेश्वर ने दासत्व के उस **जूए** को **तोड़** दिया था जो मिस्र ने देश की

गर्दन पर रखा। परिणामस्वरूप, लोग **सीधे खड़े** होकर चल सकते थे, उन्हें अब अपनी दासत्व में और झुककर चलना नहीं पड़ता था (26:13)। चूंकि परमेश्वर ने उन्हें भूतकाल में आशीष दी थी, तो वे भविष्य में उसकी प्रतिज्ञाओं के पूरे होने की आशा रख सकते थे।

शाप (26:14-43)

26:14-39 के विषय में, मैथ्यू हेनरी ने लिखा, "परमेश्वर ने उनके सामने आशीषें रखने के बाद वह यहाँ पर उनके सामने शाप रखता है, यदि वे अनाज्ञाकारिता करें तो मृत्यु और बुराई जो उन्हें नष्ट कर देगी।"[5] शाप उन अनाज्ञाकारिता से पहले प्रतिज्ञा की गई आशीषों की तुलना में अधिक संख्या में जुड़े हुए हैं; आशीषें ग्यारह आयतों में प्रकट होती हैं, जबकि शाप छब्बीस आयतों में आते हैं (इसकी तुलना व्यव. 28 से करें)। शापों को पाँच समूहों में क्रमानुसार व्यवस्थित किया गया है।

लोगों के सामने प्रस्तुत किए गए शापों का प्रत्येक समूह इसके पहले समूह से और अधिक बुरा होता चला गया। उनका समापन लोगों को दासत्व में ले जाने, देश को नाश करने (या देश के लोगों को इससे दूर करने), और देश को उजाड़ करने की चेतावनी के साथ हुआ।

परमेश्वर ने प्रत्येक समूह का आरम्भ एक "यदि" से किया। पहला, उसने वास्तव में, सामान्य तौर पर कहा, "यदि तुम मेरी आज्ञाओं का पालन न करो, तो मैं तुम्हें शाप दूंगा," उसने अन्य शापों का आरम्भ इस विचार के साथ किया: "यदि ये शाप तुम्हें पश्चाताप करने और मेरी ओर मुड़ने के लिए विवश न करें - यदि, इनके बावजूद भी, तुम मेरे विरुद्ध बलवा करते रहो - तो मैं तुम्हें इनसे सात गुणा अधिक नाशवान शाप दूंगा।"[6] इसके बाद, यहोवा ने स्पष्ट किया कि यदि वे उसकी व्यवस्था की अनाज्ञाकारिता करना जारी रखें तो वह क्या करेगा। अन्त में, परमेश्वर ने कहा यदि, शाप के चार समूहों का अनुभव करने के बाद भी, लोग उसकी ओर न मुड़ें और उसके वचन का निरादर करना जारी रखें, तो वह देश को नष्ट कर डालेगा।

इस संरचना की पहचान करना पाठक को यह समझने में सहायता करता है कि जिन शापों की सूची दी गई है वे निरा दण्ड नहीं थे। शाप लोगों को उनकी आज्ञाकारिता में विफल होने के लिए दण्ड देंगे, परन्तु उनका उद्देश्य लोगों को पश्चाताप करने के लिए तैयार करना था! उनकी मंशा, जैसा कि नया नियम कहता है, परमेश्वर के लोगों को ताड़ना देने की थी ताकि वे उसकी ओर मुड़ें और उसकी व्यवस्था का पालन करें (देखें इब्रा. 12:5-11)। यह केवल तब था कि उनके बार-बार ताड़ना के बाद भी पश्चाताप करने से इनकार करने के बाद परमेश्वर उन्हें दासत्व में ले जाएगा।

1. रोग, फसल व्यर्थ होना, और पराजय (26:14-17)

[14]"यदि तुम मेरी न सुनोगे, और इन सब आज्ञाओं को न मानोगे, [15]और मेरी

विधियों को निकम्मा जानोगे, और तुम्हारी आत्मा मेरे निर्णयों से घृणा करे, और तुम मेरी सब आज्ञाओं का पालन न करोगे, वरन् मेरी वाचा को तोड़ोगे, 16तो मैं तुम से यह करूँगा; अर्थात् मैं तुम को बेचैन करूँगा, और क्षयरोग और ज्वर से पीड़ित करूँगा, और इनके कारण तुम्हारी आँखें धुंधली हो जाएँगी, और तुम्हारा मन अति उदास होगा। और तुम्हारा बीज बोना व्यर्थ होगा, क्योंकि तुम्हारे शत्रु उसकी उपज खा लेंगे; 17और मैं भी तुम्हारे विरुद्ध हो जाऊँगा, और तुम अपने शत्रुओं से हार जाओगे; और तुम्हारे बैरी तुम्हारे ऊपर अधिकार करेंगे, और जब कोई तुम को खदेड़ता भी न होगा तब भी तुम भागोगे।"

परमेश्वर ने शापों की सूची देना आरम्भ किया और कारण बताए कि वह क्यों उसके लोगों को शाप देगा। इसके बाद, उसे यह बताया कि वह किस प्रकार इस्राएल के विश्वासघात का दण्ड देगा।

आयतें 14, 15. परमेश्वर ने इस सम्भावना को देख लिया था कि किसी न किसी दिन इस्राएल अनाज्ञाकारिता करके उससे दूर हो जाएगा। वे उसकी आज्ञाओं का पालन करने से इनकार करेंगे; वे उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं करेंगे। वे (उसकी) **विधियों** का तिरस्कार करेंगे, उनका प्राण परमेश्वर की **आज्ञाओं** से घृणा करेगा, और वे (परमेश्वर) की **वाचा** को **तोड़ेंगे**। ये पाप अनजाने, अचानक, या कभी-कभी नहीं किए जाएंगे। परमेश्वर देश को स्वेच्छापूर्वक की गई अनाज्ञाकारिता के लिए दण्ड की चेतावनी दे था।

आयतें 16, 17. यदि लोग परमेश्वर और उसके वचन का तिरस्कार करें, तो वह उन्हें दण्ड, या शाप देगा। वह उन्हें **क्षयरोग** और **ज्वर** प्रताड़ित करेगा, जो उनकी देह की **क्षति** और उनके **प्राण**[णों] के जीने इच्छा का त्याग करने का कारण होंगे।

इसके अतिरिक्त, वह उन्हें पराजित होने देगा। इस्राएल उपज बोएगा, परन्तु उनके **शत्रु** उसे खा लेंगे। ये **शत्रु** उन्हें मारेंगे भी और उनके ऊपर **शासन** भी करेंगे। परमेश्वर के लोगों का साहस भाप के समान उड़ जाएगा; वे इतने भयभीत हो जाएँगे कि वे तब भी **भागेंगे** जब उनका कोई भी पीछा नहीं कर रहा होगा! उनके शत्रुओं के हाथों पराजय के बाद यहोवा के द्वारा भेजे हुए रोग भी आयेंगे।

2. अकाल और उसके परिणाम (26:18-20)

18"और यदि तुम इन बातों के उपरान्त भी मेरी न सुनो, तो मैं तुम्हारे पापों के कारण तुम्हें सातगुणी ताड़ना और दूँगा, 19और मैं तुम्हारे बल का घमण्ड तोड़ डालूँगा, और तुम्हारे लिये आकाश को मानो लोहे का और भूमि को मानो पीतल की बना दूँगा; 20और तुम्हारा बल अकारथ गँवाया जाएगा, क्योंकि तुम्हारी भूमि अपनी उपज न उपजाएगी, और मैदान के वृक्ष अपने फल न देंगे।"

परमेश्वर ने अपने लोगों को चेतावनी देना इस आशा के साथ जारी रखा, कि वे दूसरी बार उसकी ओर मुड़ेंगे।

आयत 18. यह कहने के द्वारा, **"यदि इन बातों के उपरान्त भी ... तुम मेरी न सुनो,"** यहोवा ने संकेत दिया कि इस्राएल को चिताए गए उसके प्रारम्भिक दण्ड की मंशा उसके लोगों को अनाज्ञाकारिता से आज्ञाकारिता की ओर कूच करने के लिए प्रेरित करने हेतु थी। यदि उसके लोगों को उसकी ओर मोड़ने की उसकी योजना सफल नहीं हुई, और उन्होंने उसकी अनाज्ञाकारिता करना जारी रखा, तो परिणाम और भी गम्भीर होंगे। वह उनके पापों के लिए **सात गुणा अधिक दण्ड देगा।** अन्य शब्दों में, शापों की दूसरी श्रृंखला पहली से सात गुणा अधिक पीड़ादायक होगी।

आयतें 19, 20. हम यहाँ जिस पहले समूह के विषय में सुनते थीं वह (इस्राएल के) **बल के घमण्ड** को **तोड़ने** की परमेश्वर द्वारा दी गई चेतावनी है। परमेश्वर लोगों को कमज़ोर करने के द्वारा इस्राएल को नम्र करेगा। स्पष्ट तौर पर, उनकी कमज़ोरी आगे बताए गए सूखे के कारण होगी।

प्रबल भाषा का प्रयोग करते हुए, यहोवा ने अपने लोगों को गम्भीर अकाल की चेतावनी दी - इतना कठोर अकाल कि **आकाश लोहे** और **भूमि** मानो **पीतल** से बनी हुई प्रतीत होगी। इस तरह के अकाल में, जो लोग पृथ्वी पर काम करेंगे वे व्यर्थ में ही काम करेंगे। **भूमि** कोई **उपज उत्पन्न** नहीं करेगी, और **वृक्ष** कोई **फल** नहीं उत्पन्न करेंगे। इस अनुच्छेद में अकाल में मानव परिश्रम का उल्लेख नहीं है, परन्तु इसके परिणाम पाठकों के लिए स्पष्ट होंगे। खाने के लिए बहुत कम या कुछ भी नहीं होने से, देश घमण्ड करने के सभी कारण खो देगा। इस शाप ने इस्राएल को यह सिखाना चाहिए था कि यहोवा के नियमों का उल्लंघन करना एक गम्भीर बात थी।

3. वन पशुओं की विपत्ति (26:21, 22)

21"यदि तुम मेरे विरुद्ध चलते ही रहो, और मेरा कहना न मानो, तो मैं तुम्हारे पापों के अनुसार तुम्हारे ऊपर और सातगुणा संकट डालूँगा। 22और मैं तुम्हारे बीच वन पशु भेजूँगा, जो तुम को निर्वंश करेंगे और तुम्हारे घरेलू पशुओं को नष्ट कर डालेंगे, और तुम्हारी गिनती घटाएँगे, जिससे तुम्हारी सड़कें सूनी पड़ जाएँगी।"

दो शापों के बाद भी इस्राएल के पश्चाताप करने में विफल होने पर, परमेश्वर ने तीसरी चेतावनी दी।

आयत 21. परमेश्वर ने कहा कि, उन आपदाओं के बावजूद भी जो वह लोगों के ऊपर भेजेगा, यदि वे बलवा करना जारी रखें - और **उसके विरुद्ध चलते रहें**-तो वह इस्राएल के ऊपर **विपत्ति** को **सात गुणा** बढ़ा देगा। सम्भवतः, "विपत्ति" शब्द उन सभी दुर्भाग्यों के लिए है जिनसे परमेश्वर ने उन्हें इस समय तक प्रताड़ित किया होगा, जो शापों के दो समूहों के साथ चलते हैं। एक बार फिर, जिस बात पर बल दिया गया है उससे प्रतीत होता है कि इस क्षण पर परमेश्वर जो उनके साथ करेगा वह उससे "सात गुणा" अधिक बुरा होगा जो उसने उनके साथ पहले किया था।

आयत 22. परमेश्वर ने उनके बीच **वन पशुओं को** भेजने की चेतावनी दी।[7] ये पशु उन्हें **निर्वंश** करेंगे; वे बालकों पर आक्रमण करके उन्हें मार डालेंगे, और जनसंख्या को घटा देंगे। वास्तव में, यह चेतावनी परमेश्वर की उसके लोगों को बढ़ाने की प्रतिज्ञा का उलट जाना थी। यहाँ पर जिस विचार का संकेत दिया गया है कि परमेश्वर जो उनकी आज्ञाकारिता पर जो भी प्रतिज्ञाएं की थीं, उनके अनाज्ञाकारिता करने पर परमेश्वर उन घटनाओं के एकदम विपरीत करेगा।

4. युद्ध, मरी, और भुखमरी (26:23-26)

[23]"फिर यदि तुम इन बातों पर भी मेरी ताड़ना से न सुधरो, और मेरे विरुद्ध चलते ही रहो, [24]तो मैं भी तुम्हारे विरुद्ध चलूँगा, और तुम्हारे पापों के कारण मैं आप ही तुम को सातगुणा मारूँगा। [25]और मैं तुम पर एक ऐसी तलवार चलवाऊँगा, जो वाचा तोड़ने का पूरा पूरा पलटा लेगी; और जब तुम अपने नगरों में जा जाकर इकट्ठे होगे तब मैं तुम्हारे बीच मरी फैलाऊँगा, और तुम अपने शत्रुओं के वश में सौंप दिए जाओगे। [26]जब मैं तुम्हारे लिये अन्न के आधार को दूर कर डालूँगा, तब दस स्त्रियाँ तुम्हारी रोटी एक ही तंदूर में पकाकर तौल तौलकर बाँट देंगी; और तुम खाकर भी तृप्त न होगे।"

यदि तीसरी चेतावनी के पूर्ण होने ने भी लोगों को पश्चाताप के लिए प्रेरित नहीं किया, तो परमेश्वर ने कहा कि वह और भी अधिक भयानक शापों को भेजेगा।

आयतें 23, 24. यहोवा ने दोहराया कि इस अध्याय में चिताए गए शापों का उद्देश्य उसके लोगों को उसकी ओर मुड़ने या पश्चाताप करने के लिए प्रेरित करना था। उसने यह भी कहा कि दण्डों का सदैव इच्छा के अनुसार परिणाम नहीं मिलेगा। यदि इन्होंने ऐसा नहीं किया तो, इसके बाद क्या? जैसा पहले था कि, परमेश्वर और अधिक दण्ड भेजने के द्वारा एक बार फिर से उन्हें अपनी ओर मुड़ने के लिए प्रेरित करने का प्रयास करेगा।

परमेश्वर ने इस्राएल की निरन्तर अनाज्ञाकारिता को उसके प्रति **बलवा** व्यक्त करना कहा। यहाँ पर आशय यह है कि वे केवल पापी संत या भटकी हुई भेड़ें नहीं थे; वे परमेश्वर के शत्रु की तरह कार्य कर रहे थे। परमेश्वर की ताड़ना के बावजूद, पश्चाताप में विफल रहने पर यह परमेश्वर के लोगों को केवल विश्वासघाती मित्र नहीं बनाएगा, बल्कि यह उन्हें परमेश्वर के सक्रिय शत्रु बना देगा। यदि वे परमेश्वर के विरुद्ध **शत्रुता** वाला व्यवहार करें, तो वह भी उनके विरुद्ध **शत्रुता** का व्यवहार करेगा।

उनके पापों और पश्चाताप करने में विफल रहने के कारण परमेश्वर अपनी अप्रसन्नता व्यक्त करने के लिए क्या करेगा? यहोवा ने कहा कि वह स्वयं उन्हें (उनके) **पापों के कारण सात बार** [उन्हें] **मारेगा**। वह उन्हें उन शापों से भी "सात गुणा" अधिक बुरे शापों से दण्ड देगा जो उन्होंने पहले ही अनुभव किए थे। इन आयतों के सम्बन्ध में रॉय गेन ने टिप्पणी की, "निश्चित तौर पर इस समय तक

लोग अपने स्व-विनाशी बलवे पर प्रतिबन्ध लगा लेंगे! यदि वे ऐसा न करें तो इस मामले में, तो ताड़ना की आग बस भड़कना आरम्भ ही हुई है।"[8]

आयत 25. परमेश्वर देश के विरुद्ध शत्रु के सेनाएं भेजने के द्वारा इस्राएल के प्रति अपनी "शत्रुता" का प्रदर्शन करेगा। **वाचा के प्रति बदला लेने**, इस्राएल को वाचा की आवश्यकताओं को पूरा नहीं करने के लिए दण्डित करने हेतु वे उसकी **तलवार** चलाएंगे।

स्पष्ट है, शत्रु सेनाओं द्वारा किए गए आक्रमण से लोग अपने दीवार वाले **नगरों** में सुरक्षा के लिए इकट्ठे होंगे। हालांकि, उनके नगर, उन्हें परमेश्वर के प्रतिशोध से नहीं बचा पाएंगे। खुले देश में उन पर आक्रमण करने के लिए सेनाएं भेजने के बाद, परमेश्वर उन्हें उनके नगरों के भीतर मारने के लिए **मरी भेजेगा**। विपत्ति से बचने के लिए लोग अपने नगरों से भागेंगे और अपने शत्रुओं के **हाथों** में पड़ जाएँगे।

आयत 26. अपने लोगों को पश्चाताप तक लाने के लिए "एक तलवार" और "मरी" को नियुक्त करने के बाद, परमेश्वर ने शापों के इस समूह में अत्यन्त भुखमरी को जोड़ दिया। उसने कहा कि वह (उनके) **अन्न के आधार को** तोड़ डालेगा। "रोटी" एक सबसे सामान्य भोजन थी, और जीवित रहने के लिए सबसे आवश्यक थी। परमेश्वर कह रहा था कि वह रोटी को दुर्लभ कर देगा। यह इतनी दुर्लभ हो जाएगी कि **दस स्त्रियों** (प्रत्येक एक परिवार का प्रतिनिधित्व करती है) के पास इतनी कम रोटी होगी कि वे इसके **सेंकने के लिए एक ही तन्दूर को** साझा कर सकेंगी। (आम तौर पर एक स्त्री को अपने परिवार के लिए रोटियां सेंकने के लिए अपने ही तन्दूर की आवश्यकता होगी।)वे राशन की मात्रा (तौल-तौलकर) में रोटी के साथ वापस चली जाएंगी (शाब्दिक रूप से, "वज़न से"), जो कि दुर्लभता के विचार का सुझाव देता है। लोगों के पास खाने के लिए कुछ होगा तो सही, परन्तु यह पर्याप्त नहीं होगा। भुखमरी व्यापक होगी।

यदि इस्राएल उसकी आज्ञा का पालन करे तो परमेश्वर ने समृद्धि और उत्पादकता की प्रतिज्ञा की थी। इन आयतों में, प्रतिज्ञा की और कहा कि यदि उसके लोग अनाज्ञाकारिता करें तो वह देश को युद्ध और बीमारी और भुखमरी का शाप देगा।

5. विनाश, देश निकाला, और उजाड़ (26:27-33)

[27]"फिर यदि तुम इसके उपरान्त भी मेरी न सुनोगे, और मेरे विरुद्ध चलते ही रहोगे, [28]तो मैं अपने न्याय में तुम्हारे विरुद्ध चलूँगा, और तुम्हारे पापों के कारण तुम को सातगुणी ताड़ना और भी दूँगा। [29]और तुम को अपने बेटों और बेटियों का मांस खाना पड़ेगा। [30]और मैं तुम्हारे पूजा के ऊँचे स्थानों को ढा दूँगा, और तुम्हारी सूर्य की प्रतिमाएँ तोड़ डालूँगा, और तुम्हारी लोथों को तुम्हारी तोड़ी हुई मूर्तियों पर फेंक दूँगा; और मेरी आत्मा को तुम से घृणा हो जाएगी। [31]और मैं तुम्हारे नगरों को उजाड़ दूँगा, और तुम्हारे पवित्रस्थानों को उजाड़ दूँगा, और तुम्हारा सुखदायक सुगन्ध ग्रहण न करूँगा। [32]और मैं तुम्हारे देश को सूना कर दूँगा, और तुम्हारे शत्रु

जो उसमें रहते हैं वे इन बातों के कारण चकित होंगे। 33और मैं तुम को जाति जाति के बीच तितर-बितर करूँगा, और तुम्हारे पीछे पीछे तलवार खींचे रहूँगा; और तुम्हारा देश सूना हो जाएगा, और तुम्हारे नगर उजाड़ हो जाएँगे।"

शापों के ऊपर यह भाग इस अनुच्छेद में परमेश्वर के कथनों के द्वारा इसे उत्कर्ष तक पहुंचा। पहले, परमेश्वर ने लोगों को रोगों, पराजय, वन पशुओं, युद्ध, मरी, और भुखमरी की चेतावनी दी थी। इन आयतों में, ये कहने के द्वारा यह भी जोड़ दिया कि, यदि इस्राएल फिर भी उसकी अनाज्ञाकारिता करना जारी रखे, तो वे सब कुछ खो देंगे और उन्हें देश से बाहर बंदी बनाकर ले जाया जाएगा।

आयतें 27, 28. यदि अभी तक दिए गए शापों से भी इस्राएल ने पश्चाताप नहीं किया - यदि देश ने परमेश्वर की और **शत्रुतापूर्ण व्यवहार** जारी रखा - तो इसके बाद परमेश्वर उन्हें और भी अधिक गम्भीरता से दण्ड देगा। उसने पहले उनके विरुद्ध "शत्रुतापूर्ण व्यवहार" करने की चेतावनी दी थी (26:24); इस मामले में उसने उनके विरुद्ध **क्रोधपूर्ण शत्रुता** की चेतावनी दी। अन्य संस्करण इस वाक्यांश का अनुवाद "प्रकोप" (KJV; NKJV; NRSV; NJB), "क्रोध में" (NEB; REB), और "प्रकोप भरी चुनौती" (NAB) के रूप में करते हैं। अन्य शब्दों में,परमेश्वर उनके बलवे के कारण इतना अधिक उदास हो जाएगा कि वह अन्त में उनके विरुद्ध क्रोध या प्रकोप के साथ प्रतिक्रिया करेगा। जब परमेश्वर की उसके लोगों के प्रति प्रसन्नता क्रोध में बदल गई, तो इस्राएल के परिणाम भयानक होंगे। (उनके) **पापों के लिए सात गुणा** दण्ड देने की चेतावनी के गम्भीर परिणाम रहे होंगे।

आयत 29. अकाल देश पर प्रहार करेगा। यह इतना अधिक चरम पर होगा कि, खाने के लिए कुछ न मिलने के कारण, लोग अपने **पुत्र** और **पुत्रियों** का **मांस खाने के लिए** विवश हो जाएंगे (देखें व्यव. 28:52-57; 2 राजा. 6:28, 29; यिर्म. 19:8, 9; विलाप. 2:20; 4:10; यहेज. 5:10)।

आयत 30. परमेश्वर इस बात का भी ध्यान रखेगा कि उनके **ऊँचे स्थान** और **धूप वेदियाँ** नष्ट हो जायें। "ऊँचे स्थान" कनानियों के द्वारा पहाड़ियों की चोटियों पर खड़े किए गये मूर्तिपूजा के स्थान थे। "धूप की वेदियाँ" निस्संदेह कनानियों के देवताओं को धूप चढ़ाने के लिए थीं। परमेश्वर ऐसे किसी भी ऊँचे स्थानों या वेदियों को नष्ट करेगा जो झूठे ईश्वरों की आराधना के लिए उपयोग की जाती थीं। इस चेतावनी के अन्दर एक और चेतावनी जोड़ी गई थी जो और अधिक भयानक थी: लोगों के अवशेषों ("लोथ"; REB) को नष्ट मूर्तिपूजा सामग्री के ऊपर रखा जाएगा, सम्भवतः **मूर्तियों** के साथ जला दिया जाएगा।[9] केवल अन्यजातियों की उपासना के स्थान नष्ट ही नहीं किए जाएंगे, बल्कि वे स्वयं भी मारे जाएँगे। क्यों? क्योंकि परमेश्वर उनके पापों के कारण उनसे **घृणा** करेगा! वह उनके पापों के कारण उनसे घृणा करेगा।

आयत 31. परमेश्वर ने कहा कि वह (उनके) **नगरों को उजाड़** देगा। जब यह होगा तो उनके **पवित्रस्थान उजाड़** हो जाएंगे। कोई भी उनके पवित्र स्थानों में उपासना के लिए नहीं आएगा; वे सूनसान पड़े रहेंगे। (ये "पवित्रस्थान" सम्भवतः,

"ऊँचे स्थानों" और धूप की वेदियों के ही समान थे, ऐसे स्थान जहाँ पर झूठे देवताओं की आराधना की जाती थी)। यहोवा ने कहा कि, उस क्षण पर, चाहे उसके लोग उसे बलिदान ही क्यों न चढ़ाएं, वह उन्हें ग्रहण नहीं करेगा। वह (उनके) **सुखदायक सुगन्ध को ग्रहण नहीं करेगा।** जब तक परमेश्वर उनके बलिदान ग्रहण नहीं करेगा, तब तक उनके पास उनके पापों से क्षमा किए जाने का कोई उपाय नहीं था।

आयत 32. परमेश्वर **देश को उजाड़ करेगा**। यहाँ पर विचार यह प्रतीत होता है कि देश निर्जन हो जाएगा; परन्तु, इससे भी अधिक, यह अनुत्पादक और अनाकर्षक हो जाएगा। यह स्थिति इतनी चरम होगी कि परमेश्वर के लोगों के निष्कासन के बाद जो **शत्रु में इसमें बस जाएंगे**[गए], वे इससे **चकित** हो जाएंगे। इस्राएल के पाप का एक भयानक परिणाम यह होगा कि "दूध और शहद की धाराएं बहने वाला देश" इसके निवासियों के लिए कुरूप और प्रतिकूल हो जाएगा।

इस चेतावनी के विषय में दो तथ्य ध्यान देने योग्य हैं: (1) इस्राएल के शत्रु उस देश में बस जाएंगे। और जैसा कि अगली आयत स्पष्ट करती है, इस्राएल को उस देश से निकाल कर विदेशों में तितर-बितर कर दिया जाएगा। (2) यह स्थान जो उजाड़ होने वाला था यह वही स्थान था जिसके विषय में परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा की थी और इसे इस्राएल को देने वाला था। इसे शीघ्र ही यहोशू के द्वारा जीत लिया जाएगा और बारह गोत्र इसमें बस जाएँगे। यह इस्राएल का देश होने वाला था, परन्तु किसी दिन यह उनसे खो भी सकता था यदि वे उस परमेश्वर के विरुद्ध बलवा करे जो इस देश को उन्हें दे रहा था।

आयत 33. परमेश्वर की परम चेतावनी यह थी कि इस्राएली **देशों के बीच में तितर-बितर हो जाएँगे**। उन्हें उनके देश से **तलवार** के द्वारा बाहर निकाल दिया जाएगा। जब वे चले जाएँगे तो देश **उजाड़** हो जाएगा और **नगर** सूने हो जाएँगे। एक भाव से, देश नष्ट हो जाएगा। लोग सब कुछ खो बैठेंगे! परमेश्वर ने कहा, या, इस्राएल के उसकी आज्ञाओं का पालन न करने के हठी इनकार, और पश्चाताप के बिना निरन्तर बलवा करते रहने के कारण होगा। परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन अनिवार्य तौर पर एक व्यक्ति को उसके विनाश की ओर ले जाता है।

अन्तिम दण्ड: दासत्व और उजाड़ (26:34-39)

34"तब जितने दिन वह देश सूना पड़ा रहेगा और तुम अपने शत्रुओं के देश में रहोगे उतने दिन वह अपने विश्रामकालों को मानता रहेगा, तब ही वह देश विश्राम पाएगा, अर्थात् अपने विश्रामकालों को मानता रहेगा। 35जितने दिन वह सूना पड़ा रहेगा उतने दिन उसको विश्राम रहेगा, अर्थात् जो विश्राम उसको तुम्हारे वहाँ बसे रहने के समय तुम्हारे विश्रामकालों में न मिला होगा वह उसको तब मिलेगा। 36और तुम में से जो बच रहेंगे और अपने शत्रुओं के देश में होंगे उनके हृदय में मैं कायरता उपजाऊँगा; और वे पत्ते के खड़कने से भी भाग जाएँगे, और वे ऐसे भागेंगे जैसे कोई तलवार से भागे, और किसी के बिना पीछा किए भी वे गिर गिर पड़ेंगे। 37जब कोई पीछा करनेवाला न हो तब भी मानों तलवार के भय से वे एक दूसरे

से ठोकर खाकर गिरते जाएँगे, और तुम को अपने शत्रुओं के सामने ठहरने की कुछ शक्ति न होगी। 38तब तुम जाति जाति के बीच पहुँचकर नष्ट हो जाओगे, और तुम्हारे शत्रुओं की भूमि तुम को खा जाएगी। 39और तुम में से जो बचे रहेंगे वे अपने शत्रुओं के देश में अपने अधर्म के कारण गल जाएँगे; और अपने पुरखाओं के अधर्म के कामों के कारण भी वे उन्हीं के समान गल जाएँगे।"

इस्राएल को पाँच शापों की चेतावनी के बाद, परमेश्वर ने इस्राएल के "तितर-बितर" होने और देश के "उजाड़ होने" परिणामों की व्याख्या की।

आयतें 34, 35. लोगों को परमेश्वर की अन्तिम दण्ड के परिणामस्वरूप, उजाड़ **देश** एक अनुकूल परिणाम का अनुभव करेगा: **तब जितने दिन वह देश सूना पड़ा रहेगा** उतने दिन वह **अपने विश्रामकालों** [सब्त] **को आनन्द मानता रहेगा।** "आनन्द" इब्रानी शब्द רָצָה *(रेत्साह)*, जिसका शाब्दिक अर्थ "उससे तृप्त रहेगा।"

परमेश्वर इस्राएल के भविष्य में देख रहा था। विचार यह है कि, इस समय तक, इस समय तक उसके लोग उनकी प्रतिज्ञा के देश में रह रहे थे परन्तु सब्त और सब्त के वर्ष का **पालन करने** में तब विफल हो गए थे, जब देश कोई बीज बोने से **विश्राम** दिया जाना चाहिए था। एक बार लोगों के देश से बाहर निकाले जाने के बाद, यह बीज बोने से उस स्वतंत्रता का आनन्द लेने के लिए जो उसके लिए बाकी बची हुई थी। परमेश्वर ने भूमि के लिए विश्राम की आज्ञा दी थी, और वह इसकी व्याख्या कर रहा था कि यदि लोग इसमें निरन्तर अनाज्ञाकारिता के साथ वास करते रहेंगे।

आयतें 36, 37. यद्यपि एक उजाड़ देश इसके विश्राम का आनन्द लेगा, परन्तु तितर-बितर हो चुके लोग इस बिखेरे जाने से आनन्दित नहीं होंगे। उन्हें दुर्बलताओं, कायरता और अयोग्य से मारा जाएगा। उनके **हृदयों** में **कायरता** होगी जो उन्हें प्रत्येक वस्तु से भयभीत कर देगी! हवा से उड़ती हुई एक **पत्ती की आवाज़** से भी वे भाग खड़े होंगे। वे उस समय भी **भागेंगे** जब कोई उनका पीछा न करता होगा - केवल उन शत्रुओं से जिनके होने की वे कल्पना करेंगे। उनके मनों के भूतों से भागते हुए,वे इतने अक्षम हो जाएंगे कि वे एक दूसरे से **ठोकर खाकर** गिर पड़ेंगे। परमेश्वर के तितर-बितर किए हुए लोग इतने **कमज़ोर** होंगे कि, वे उनके **सामने** खड़े नहीं रह पाएंगे।

आयतें 38, 39. आयत 38 में, परमेश्वर ने उन इस्राएलियों के अन्तिम परिणाम की व्याख्या की जो उसके वचन के पालन करने का इनकार करने के कारण तितर-बितर हो जाएँगे: वे **जाति जाति के बीच पहुँचकर नष्ट हो जाएंगे, और उनके शत्रुओं की भूमि** उनको **खा जाएगी**। वे उनके निकले जाने के देशों में मर जाएंगे।

परमेश्वर ने 39 आयत में चेतावनी को और प्रबल भाषा के साथ दोहराया। **तुम में से जो बचे रहेंगे** उन लोगों का सन्दर्भ देता है जो देश के विनाश में बचे रहेंगे और इसके बाद देशों के मध्य तितर-बितर हो जाएँगे। उनके साथ क्या होगा? ये आयतें कहती हैं वे मर जाएंगे; परन्तु यह एक जानकारी इसमें जोड़ता है कि, वे

उनकी मृत्यु से **गल जाएंगे**। उनके देश का विनाश धीरे-धीरे और भयानक होगा।

परमेश्वर ने फिर से कहा कि, जब यह मृत्यु घटी होगी, तो यह लोगों के **अधर्मों**, या पाप के कारण होगी। **हालांकि**, उसने इसमें यह भी जोड़ा कि वे उनके **पुरखाओं** के पापों के कारण भी दण्ड पाएंगे। यदि इस्राएल ने पाप किया और पश्चाताप करने से मना किया, तो इस परिणाम के द्वारा कि देश को दण्ड दिया गया और इसके बाद वह देश से निकाले जाने के बाद नष्ट हो गया, इसका अन्तिम विनाश केवल एक पीढ़ी के पापों के कारण नहीं होगा। यह अनाज्ञाकारी इस्राएलियों की पीढ़ियों की श्रृंखला के निरन्तर पाप करते रहने के कारण होगा।

पश्चाताप की सम्भावना (26:40-43)

40"पर यदि वे अपने और अपने पितरों के अधर्म को मान लेंगे, अर्थात् उस विश्वासघात को जो वे मेरा करेंगे, और यह भी मान लेंगे कि हम यहोवा के विरुद्ध चले थे, 41इसी कारण वह हमारे विरुद्ध होकर हमें शत्रुओं के देश में ले आया है। यदि उस समय उनका ख़तनारहित हृदय दब जाएगा और वे उस समय अपने अधर्म के दण्ड को अंगीकार करेंगे; 42तब जो वाचा मैं ने याक़ूब के संग बाँधी थी उसको मैं स्मरण करूँगा, और जो वाचा मैं ने इसहाक से और जो वाचा मैं ने अब्राहम से बाँधी थी उनको भी स्मरण करूँगा, और इस देश को भी मैं स्मरण करूँगा। 43पर वह देश उनसे रहित होकर सूना पड़ा रहेगा, और उनके बिना सूना रहकर भी अपने विश्रामकालों को मानता रहेगा; और वे लोग अपने अधर्म के दण्ड को अंगीकार करेंगे, इसी कारण से कि उन्होंने मेरी आज्ञाओं का उल्लंघन किया था, और उनकी आत्माओं को मेरी विधियों से घृणा थी।"

अनुच्छेद में इस बिंदु तक भविष्यवाणी किए गए भयानक शापों का अंधेरा अचानक परमेश्वर की इस घोषणा से दूर हो गया कि, इस्राएल को पूरी तरह से दण्डित करने के बाद, उसके पास पश्चाताप करने का अवसर होगा।

आयतें 40, 41. जिसने इस बिंदु तक अध्याय पढ़ा है, उसने निष्कर्ष निकाला होगा कि एक धर्मत्यागी इस्राएल के लिए कोई आशा नहीं होगी, परन्तु अचानक यहोवा ने घोषणा की कि इस्राएल को पश्चाताप करने के लिए क्या करना होगा। मूसा के दिनों में इस संदेश को सुनते हुए प्रत्येक इस्राएली को निश्चित रूप से आश्वस्त हो गया हो जब उसे यह पता चला होगा कि, भले ही परमेश्वर के लोग अनाज्ञाकारी थे और भले ही परमेश्वर ने उन्हें बार-बार शाप के साथ दण्डित किया, फिर भी उन्हें पश्चाताप करने का अवसर मिलेगा।

पश्चाताप की सम्भावना इस तथ्य को रेखांकित करती है कि परमेश्वर की ताड़ना पूरी तरह से गलत कार्य करने के लिए देश को दण्डित करने की मंशा नहीं थी; उन्हें परमेश्वर के लोगों को पश्चाताप करने के लिए भी रचा गया ताकि परमेश्वर एक बार फिर से उन्हें आशीष दे सके। इस अनुच्छेद में, परमेश्वर एक समय देख रहा था जब उसके प्रति इस्राएल की "शत्रुता" उसे उनके प्रति "शत्रुता" दिखाने के लिए उकसाएगी। भले ही उन्हें उनके शत्रुओं के देश में ले जाया जाए,

फिर भी यहोवा ने कहा कि यदि वे पश्चाताप करेंगे तो वह उन्हें फिर से आशीष देगा।

परमेश्वर ने कहा कि पश्चाताप करने के लिए इस्राएल को क्या करने की आवश्यकता होगी?

पहला, उन्हें **अपने और अपने पितरों के अधर्म का अंगीकार करना होगा।** लोगों के रूप में, वे एक साथ लहू और विश्वास की बेड़ियों से बंधे थे-केवल बारह गोत्रों में ही नहीं, परन्तु सम्पूर्ण इतिहास में, एक पीढ़ी से लेकर दूसरी पीढ़ी तक। उनके पाप में **अधर्म**, **विश्वासघात**, यहोवा के विरुद्ध **शत्रुतापूर्ण व्यवहार** सम्मिलित था। उनके पाप उनके प्रति परमेश्वर के **शत्रुतापूर्ण** व्यवहार का कारण होंगे और परिणामस्वरूप वे सभी शाप होंगे जो उसने रेखांकित किए थे।

दूसरा, उन्हें अपने **खतनारहित हृदय** (या "अन्यजाति") नम्र करने होंगे। उनके हृदय को नम्र करने के लिए उन्हें यहोवा के सामने पश्चाताप करने के लिए झुकने, उनके अपराध को स्वीकार करने और उसकी महानता और शुद्धता को स्वीकार करने की आवश्यकता थी। इसका अर्थ था कि वे अपने बुरे कर्मों के लिए कोई बहाना नहीं बना सकते, परन्तु उन्हें दया के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए।

तीसरा, जितना अधिक सम्भव हो सके, उन्हें अपने गलत कार्यों के लिए क्षतिपूर्ति करनी थी। उन्हें उस कार्य कि क्षतिपूर्ति की आवश्यकता होगी जो उन्होंने गलत किया था। इस सन्दर्भ में, उनकी क्षतिपूर्ति का तात्पर्य उनके शत्रुओं के द्वारा देश से निकाला जाना और देशों के बीच में तितर-बितर हो चुके लोगों के समान रहन प्रतीत होता है।[10]

आयतें 42, 43. यदि इस्राएल अपने पापों का अंगीकार करने के द्वारा पश्चाताप करे, और स्वयं को परमेश्वर के सामने नम्र करे, और क्षतिपूर्ति करे, तो वे इस बात से आशीषित होंगे कि वह उनके साथ की गई (उसकी) **वाचा को स्मरण करेगा।** परमेश्वर का "स्मरण करना" यह संकेत नहीं करता कि वह वाचा को भूल गया था। बल्कि, इसका अर्थ है कि परमेश्वर एक बार फिर वाचा के आधार पर कार्य करेगा, जैसा कि उसने पहले किया था। शब्दावली यह संकेत करती है वाचा का रिकॉर्ड, जैसा वह था उसे वैसे ही, तब अलग रख दिया गया जब इस्राएल ने अपने बलवा करने वाले मार्ग का अनुसरण किया था। एक बार इस्राएल के अपने बलवे का त्याग करने और पश्चाताप करने के बाद, परमेश्वर वाचा की आशीषों को फिर से जीवित करेगा और एक बार फिर से उन पर कार्य करेगा।

परमेश्वर ने उस वाचा की पहचान यह बताते हुए की और कहा कि सीनै वाचा को उन पूर्व वाचाओं की जारी रहने के रूप में माना जाना था, जिसे वह याकूब, इसहाक और अब्राहम के साथ की गई वाचा के समान रूप में ही नवीनीकृत करेगा। इस अनुच्छेद में परमेश्वर की मुख्य आशीष उस देश की प्रतिज्ञा से सम्बन्धित है जो अब्राहम दी गई थी और इसे इसहाक और याकूब के साथ भी दोहराया था, और यह अब शीघ्र ही पूरी हो जाएगी, जब इस्राएल कनान पर विजय प्राप्त करेगा। जब परमेश्वर ने कहा, **"मैं इस देश को भी स्मरण करूंगा,"** तो वह कह रहा था, "मुझे देश के विषय में की गई प्रतिज्ञा स्मरण आएगी"; और वह यह कह रहा था कि वह

अपने बिखरे हुए लोगों को देश में फिर से स्थापित करेगा।

इस बीच, जब तक पुनः स्थापन का समय नहीं आया, तब तक देश **उजाड़** पड़ा रहेगा और उन **सब्त** के दिनों का आनन्द उठाएगा जिनका अनुभव उसे इस्राएल कि अनाज्ञाकारिता के वर्षों के दौरान नहीं हुआ था जब लोग अपने सब्त का पालन नहीं कर रहे थे। ताड़ना की इस अवधि के दौरान, जबकि लोग बिखरे हुए थे और देश उजाड़ हो गया था, वे परमेश्वर की व्यवस्था का तिरस्कार करने और परमेश्वर को उनसे घृणा कर के लिए प्रेरित करने कर्ण **अपने पापों के लिए अंगीकार करेंगे**। स्पष्ट है, परमेश्वर के शाप का अनुभव करना एक तरीका था कि उनके लोग अपने पापों का अंगीकार कर सकते थे।

परमेश्वर की उसके लोगों का त्याग न करने की प्रतिज्ञा करना (26:44, 45)

44"इतने पर भी जब वे अपने शत्रुओं के देश में होंगे तब मैं उनको इस प्रकार नहीं छोड़ूँगा, और न उनसे ऐसी घृणा करूँगा कि उनका सर्वनाश कर डालूँ और अपनी उस वाचा को तोड़ दूँ जो मैं ने उनसे बाँधी है; क्योंकि मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूँ; 45परन्तु मैं उनकी भलाई के लिये उनके पितरों से बाँधी हुई वाचा को स्मरण करूँगा; जिन्हें मैं अन्यजातियों की आँखों के सामने मिस्र देश से निकालकर लाया कि मैं उनका परमेश्वर ठहरूँ; मैं यहोवा हूँ।"

आयतें 44, 45. जैसे ही उसने आशीषों और शापों के विषय में अपने संदेश को समाप्त किया, यहोवा ने अपने लोगों को एक अद्‌भुत आश्वासन दिया कि वह उन्हें कभी नहीं त्यागेगा। वाक्यांश **इतने पर भी** स्पष्ट रूप से शत्रु देशों के बीच परमेश्वर के द्वारा उसके लोगों की दासत्व में तितर-बितर करने का उल्लेख करता है। यद्यपि परमेश्वर, इस्राएल की हठपूर्ण अनाज्ञाकारिता के कारण, इस्राएल के शत्रुओं को उस पर विजय प्राप्त करके और उन्हें दूर ले जाने देगा, फिर भी वह उनका उसकी धन होने के रूप में दावा करेगा।[11]

परमेश्वर ने इस बात का दावा बलपूर्वक यह कहने के द्वारा किया, चाहे वे **अपने शत्रुओं के देश में रहें**, वह इस सीमा तक उनका **तिरस्कार** नहीं करेगा या उनसे **घृणा** नहीं करेगा कि वह उन्हें सम्पूर्ण रीति से **नाश कर डाले**। वह क्यों अपने बलवा करने वाले लोगों के साथ गाँठ बांधे रहेगा? **वाचा के** कारण! परमेश्वर ने इस्राएल के साथ (**उनके पुरखाओं**[12]) के साथ उस समय वाचा बांधी थी जा उसने उन्हें **मिस्र** से छुड़ाया था। परमेश्वर ने कहा कि चाहे वे वाचा की शर्तों के अनुसार जीएँ या नहीं, वह समझौते का सम्मान करेगा। उसके वचन का पालन करने का अर्थ है कि परमेश्वर इस्राएल को अपने विशेष लोग बनाए रहेगा, चाहे कुछ भी क्यों न हो। परमेश्वर ने अपने लोगों को मिस्र से छुड़ाया था और उनके साथ वाचा बांधी थी; वे उसके लोग बन गए थे, यह वाचा इस्राएल के देशों के बीच तितर-बितर होकर रहने के बाद भी रहेगी।

यह सत्य उस के द्वारा आश्वस्त था जो इसे परिभाषित करता है: **परमेश्वर**। उसने यह कहकर इसे समाप्त किया, **"मैं यहोवा हूँ।"**

अन्तिम वचन (26:46)

46जो जो विधियाँ और नियम और व्यवस्था यहोवा ने अपनी ओर से इस्राएलियों के लिये सीनै पर्वत पर मूसा के द्वारा ठहराई थीं वे ये ही हैं।

आयत 46. यह कथन इसके पहले छब्बीस अध्यायों में पाए जाने वाले प्रकाशन को सारांशित करता है। (1) **विधियाँ और नियम और व्यवस्था,** जो (2) **यहोवा से** उत्पन्न हुए थे, (3) और उन्हें **इस्राएल के पुत्रों को दिया गया था,** (4) मानव लेखक **मूसा के माध्यम से,**[13] (5) प्रकाशन के स्थान, **सीनै पर्वत पर**। आयत 46 समस्त पुस्तक के निष्कर्ष का कार्य करती हुई प्रतीत होती है।[14] आर. लेयर्ड हैरिस ने लिखा, "यह आयत वास्तव में लैव्यव्यवस्था की सामग्री का एक सारांश था, हालांकि मन्नतों के ऊपर कुछ अतिरिक्त सामग्री को गिनती के आरम्भ में छावनी के तोड़कर और कनान देश की ओर कूच करने की आज्ञा के साथ दी गई है।"[15]

अन्तिम आयत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उस नियम पर बल देती है जो परमेश्वर की ओर से आया था, एक मनुष्य की ओर से नहीं। इसमें परमेश्वर के सेवक मूसा ने मध्यस्थता की। उदार विद्वानों के विचार के विपरीत, यह दर्जनों अज्ञात, अनिच्छुक लेखकों और संपादकों द्वारा सैकड़ों वर्षों के परीक्षण-और-त्रुटि प्रयोगों, जोड़ों, घटकों और संशोधनों का परिणाम नहीं था। यदि कोई बाइबल पर विश्वास करता है, तो उसे विश्वास करना चाहिए कि लैव्यव्यवस्था के नियम, पेंटाटुक के शेष भागों के नियमों की तरह, परमेश्वर के मन में उत्पन्न हुए और उन्हें मूसा के माध्यम से इस्राएल को दिया गया।

अध्याय 26 में आशीषों तथा शापों की प्रतिज्ञाओं का पूरा होना

सीनै पर्वत पर ये प्रतिज्ञाएं, या भविष्यवाणियां, आशीर्वादों और शापों की चेतावनियाँ मूसा के माध्यम से दिए गए थे। क्या वे पूरे हुए थे? यदि हाँ, तो कब और कैसे?

वे किस प्रकार पूरे हुए थे। अध्याय 26 का कोई भी पाठक जो पुराने नियम के इतिहास से परिचित है, उसे यह महसूस हो सकता है कि वह भविष्यवाणी पढ़ रहा है-इतिहास पहले से लिखा गया है। बाइबल का रिकार्ड है कि, लगभग एक हज़ार वर्षों की अवधि में, परमेश्वर ने इस्राएल को तब आशीष दी जब उन्होंने उसका पालन किया और लोगों के अनाज्ञाकारिता करने पर देश को शाप दिया। आइए कुछ उदाहरणों पर विचार करें।

उनकी जंगल की यात्रा समाप्त होने से पहले, इस्राएल ने कई बार परमेश्वर की अप्रसन्नता का अनुभव किया, जब उसने उनकी अनाज्ञाकारिता के कारण उन्हें शाप दिया, या दण्ड दिया था। वास्तव में, मिस्र से निकले अधिकांश लोग अपने पाप के

कारण जंगल में नाश हो जाएंगे।

न्यायियों में, लोग परमेश्वर से मूर्तिपूजा की ओर फिर जाएँगे, परमेश्वर उन्हें सताने के लिए एक अन्य देश को भेजेगा। इसके बाद वे पश्चाताप करेंगे और परमेश्वर एक बार फिर उन्हें छुड़ाएगा और आशीष देगा।

इस्राएल के राजाओं के विषय में लिखी गई पुस्तक में लेखक यह स्पष्ट करता है, कि परमेश्वर ने तब राजा और (देश को) आशीष दी जब राजा धर्मी थे और उस समय शाप दिया जब राजा दुष्ट थे। (विभाजित साम्राज्य के समय के दौरान वे अधिकांश समय दुष्ट थे।)

शापों के पूर्ण होने का मुख्य समय तब आया जब, वर्षों तक इस्राएल के आज्ञा उल्लंघन से क्रोधित होने के बाद परमेश्वर ने, लोगों को दासत्व में जाने दिया। पहला, अश्शूरियों ने उत्तरी राज्य, इस्राएल को नाश कर दिया; दूसरा, बेबीलोन के लोग दक्षिण के साम्राज्य यहूदा से बंदियों को देश से लेकर चले गए थे।

परमेश्वर ने बेबीलोन में अपने निर्वासित लोगों को न त्यागने के द्वारा भी अपना अपनी प्रतिज्ञा बनाए रखी। अन्त में वह शेष बचे लोगों को वापस प्रतिज्ञा किए गए देश में लाया और उनके साथ उनके वाचा का नवीकरण किया (एज्रा और नहेम्याह देखें)। इन सभी बातों को लैव्यव्यवस्था 26 में पाई जाने वाली आशीषों और शापों के द्वारा पहले ही देखा लिया गया था।

वे किस प्रकार पूरे नहीं हुए। अध्याय की प्रतिज्ञाओं और शापों की मंशा इस्राएल के लिए सम्पूर्ण रूप में थी न कि देश के प्रत्येक व्यक्ति के लिए। परमेश्वर ने लोगों से प्रतिज्ञा की और कहा कि यदि वे उसकी आज्ञाओं का पालन करें तो वे समृद्ध होंगे; उसने यह प्रतिज्ञा नहीं की थी कि प्रत्येक व्यक्ति यदि व्यवस्था का पालन करे तो वह समृद्ध होगा।

पुराना नियम इसे स्पष्ट करता है धर्मी लोग सदैव समृद्ध नहीं थे और कई बार दुष्ट लोग समृद्ध होते थे। उदाहरण के लिए, अय्यूब के अनुभवों का उद्देश्य उस गलत धारणा को सही करने के लिए किया गया था कि धार्मिकता अनिवार्य रूप से समृद्धि की ओर ले जाती है जबकि पीड़ा सदैव पाप का परिणाम होती है। भजन संहिता की पुस्तक के लेखकों ने प्रायः शिकायत की कि वे धर्मी होने पर भी, पीड़ित थे, जबकि उसी समय बुरे लोग समृद्ध थे। अच्छे लोगों को कभी-कभी बुरे लोगों ने मारा था (जैसे नाबोत की हत्या हुई थी ताकि दाख की बारी अहाब की हो सके)। इसके अलावा, पुराने नियम के समय में शहीद थे। परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य होने से सदैव समृद्धि मिलती है, यह विचार एक शहीद की मृत्यु से भी ख़ारिज हो जाता है!

किसी के उस पुरानी वाचा को समझने के लिए जो परमेश्वर ने इस्राएल के साथ बाँधी थी, उसे यह एहसास होना चाहिए कि आशीषें और शाप देश के ऊपर लागू होते थे, प्रत्येक व्यक्ति के लिए नहीं। वे राष्ट्रीय प्रतिज्ञाएं थीं,न कि व्यक्तिगत।

अनुप्रयोग

"आशीषें और शाप," "और स्वास्थ्य और धन" सुसमाचार (अध्याय 26)

कुछ लोग आज "स्वास्थ्य और धन" के सुसमाचार का प्रचार करते हैं। उनका संदेश यह है कि परमेश्वर अपने लोगों से चाहता है कि वे शारीरिक और आर्थिक तौर पर ठीक रहें। वे दावा करते हैं कि, यदि मसीही परमेश्वर के मार्गों का अनुसरण करेंगे, तो वह आश्वासन देगा कि वे धनी हो जाएंगे और कभी बीमार नहीं पड़ेंगे।

इस सिद्धांत को प्रमाणित करने के लिए, ये प्रचारक प्रायः पुराने नियम का सन्दर्भ देते हैं, और यह दावा करते हैं कि अब्राहम को दी गई प्रतिज्ञाएं और अध्याय 26 के समान अनुच्छेद सभी मसीहियों पर लागू होते हैं। ऐसा करने के द्वारा, वे कई तथ्यों को अनदेखा कर देते हैं। अब्राहम वास्तव में धनी था, परन्तु वह एक विशेष व्यक्ति था जिसने परमेश्वर की छुड़ौती योजना में एक निश्चित भूमिका निभाई थी। कोई भी परमेश्वर की योजना में उसी स्थान पर कब्जा करने का दावा नहीं कर सकता जो अब्राहम के पास था; इसलिए, कोई भी दावा नहीं कर सकता कि उसे अब्राहम को दी गई प्रतिज्ञा को प्राप्त करने का आश्वासन है। जैसा कि पहले बताया गया था, इस्राएल की प्रतिज्ञाएं देश के लिए की गई प्रतिज्ञाएं थीं, न कि व्यक्तियों के लिए। परमेश्वर के लोगों के बीच धर्मी व्यक्ति प्रायः निर्धन थे। जो पुराना नियम सिखाता है वह आज मसीहियों पर सीधा लागू नहीं होता है, क्योंकि मसीही अब और अधिक पुरानी वाचा के अधीन नहीं जीते हैं।

कभी-कभी झूठे शिक्षक लूका 6:38 जैसे नए नियमों के लिए आकर्षित करते हैं कि वे अपने उस दावे को प्रमाणित करें कि परमेश्वर सदैव विश्वासयोग्य मसीहियों को स्वास्थ्य और धन के साथ आशीष देगा। उस आकर्षण में समस्याएं हैं। कई मसीही शहीद हुए थे (उदाहरण के लिए, स्तिफनुस)। शहीद का सिद्धांत "स्वास्थ्य और धन" सुसमाचार के साथ असंगत है। यद्यपि कुछ मसीही नए नियम के समय में समृद्ध थे (1 तीमु. 6:17), कई लोग नहीं थे (1 कुरि. 1:26)। यदि "स्वास्थ्य और धन" का सुसमाचार सत्य होता, तो सभी विश्वासयोग्य मसीहियों को धनी होना चाहिए था। इसके अलावा, मसीही नए नियम के समय में बीमार हुए और सदैव प्रभु के द्वारा उन्हें चंगा नहीं किया गया (2 कुरि. 12:7-10; 1 तीमु. 5:23; 2 तीमु. 4:20)। यदि "स्वास्थ्य और धन" सुसमाचार सत्य होता, तो उस तथ्य को कैसे समझाया जा सकता था?

नया नियम भौतिक आशीषों के विषय में क्या सिखाता है? नए नियमों में भौतिक आशीषों से सम्बन्धित केवल दो प्रतिज्ञाएँ दी गई हैं। (1) परमेश्वर ने हमारी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने का वचन किया है (जैसा कि वह उन्हें परिभाषित करता है) यदि हम पहले उसके राज्य की खोज करते हैं (मत्ती 6:33)। (2) अगर हम धार्मिक रूप से जीते हैं, तो उसने प्रतिज्ञा की है कि हमें सताया जाएगा (2 तीमु. 3:12)। हमें निष्कर्ष निकालना होगा कि "स्वास्थ्य और धन" सुसमाचार के दावे झूठे हैं। लूका 6:38 जैसे अनुच्छेदों में मसीहियों से प्रतिज्ञा की

गई आशीषें स्वभाव में आत्मिक थे, भौतिक और सांसारिक नहीं।

नई वाचा की आशीषें और शाप कौन से हैं? जो लोग प्रभु की आज्ञा का पालन करते हैं वे सबसे बड़ी आशीष प्राप्त करेंगे: वे उद्धार प्राप्त करेंगे (इब्रा. 5:8, 9)। दूसरे हाथ पर, जो लोग अनाज्ञाकारिता करते हैं, वे श्रापित ठहरेंगे (2 थिस्स. 1:8, 9)। यीशु ने मत्ती 25 में परम आशीष और सबसे भयानक शाप का उदाहरण दिया। उसने वहाँ पर कहा कि, न्याय के दिन, जो लोग दूसरों की सहायता करने में विफल हुए हैं वे इन भयानक शब्दों को सुनेंगे हे शापित लोगों, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ (मत्ती 25:41)। जिन लोगों ने दूसरों की भलाई की होगी वे स्वागत के इन शब्दों को सुनेंगे, 'हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया गया है (मत्ती 25:34)। नई वाचा की परम आशीषों और शापों की घोषणा उस अन्तिम महान दिन पर की जाएगी, जो प्रत्येक व्यक्ति या तो ये सुनेगा, "हे शापित लोगों ... दूर चले जाओ" या फिर "हे धन्य लोगों, आओ।" आपके और मेरे लिए इनमें से कौन सा होगा?

परमेश्वर ने इस्राएल को सम्पूर्ण रूप से अस्वीकार क्यों नहीं किया? (26:44, 45)

परमेश्वर ने ऐसा क्यों कहा कि, इस बात पर भी कि इस्राएल को दासत्व में ले जाए जाने के द्वारा उसके निरन्तर बलवे का दण्ड दिया जाएगा, फिर भी वह इस्राएल को पूरी तरह से अस्वीकार या नष्ट नहीं करेगा? शब्द में दिया गया उत्तर यह है कि उसने उनके साथ एक वाचा बाँधी थी!! परमेश्वर इस्राएल के साथ अपनी वाचा के सम्बन्ध को बनाए रखने के प्रीत चिन्तित क्यों था?

यदि हम यह सोचते हैं कि वाचा को बनाए रखने का परमेश्वर के निश्चय में केवल इस्राएल के लिए उसका महान प्रेम था, तो हम भूल कर रहे हैं। परमेश्वर ने अब्राहम के साथ वाचा बाँधी ताकि हमारा पिता सभी देशों के लिए आशीष का कारण हो सके (उत्पत्ति 12:3)। परमेश्वर ने इस्राएल के साथ भी सीनै पर्वत पर एक वाचा बाँधी ताकि ये लोग "याजकों का एक साम्राज्य" बन सकें (निर्गमन 19:6), जिनके माध्यम से उसके प्रेम की मध्यस्थता समस्त संसार में हो सके।

इस्राएल को त्यागने के लिए परमेश्वर का इनकार, केवल उन लोगों के लिए परमेश्वर के प्रेम से प्रेरित नहीं था जिन्हें वह मिस्र से छुड़ाकर लाया था, बल्कि मुख्य रूप से हर कहीं के लोगों के लिए था। परमेश्वर की योजना अब्राहम के बीज के माध्यम से संसार को आशीष देना थी, और बीज मसीह था (गला. 3:16)। यदि उसने इस्राएल को पूर्ण तौर पर अस्वीकार कर दिया होता, उसकी योजना कभी भी पूरी नहीं हो सकती थी; और इसके बाद मानव जाति एक उद्धारकर्ता के बिना नाश हो जाती।

समाप्ति नोट्स

[1]इन संधियों के अन्य भाग एक दस्तावेज़ी उपनियम थे जो संकेत करते थे कि संधि को कहाँ रखा जाएगा और संधि के गवाहों की एक सूची भी होती थी। (गॉर्डन वेन्हम, "कवनेंट्स एण्ड नियर ईस्टर्न ट्रीटीज़," इन *एड्समैन हैण्डबुक टू द बाइबल*, एड. डेविड एलेग्जेंडर एण्ड पैट एलेग्जेंडर [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1973], 198-99.) [2]जिस इब्रानी शब्द का "भोजन" (לֶחֶם, *लेखेम)* में अनुवाद किया गया है उसका शाब्दिक अर्थ "रोटी" है। [3]जॉन ई. हार्टले के द्वारा 26:10 की व्याख्या इस प्रकार है: "यह आयत भरपूर फसल की एक श्रृंखला का उदाहरण देती है। पुरानी उपज जो सूख चुकी थी और उसे भण्डार में रखा गया था उसे नई फसल के सूखने के लिए स्थान बनाने हेतु अलग हटाना पड़ता था" (जॉन ई. हार्टले, *लैव्यव्यवस्था*, वर्ड बिब्लिकल कमेंट्री, वॉल्यूम 4. [डल्लास: वर्ड बुक्स, 1992], 463). [4]"तिरस्कार" (געל, *गा'अल)* में अनुवाद किए गए इब्रानी शब्द का शाब्दिक अर्थ "घृणा" है। [5]मैथ्यू हेनरी, *कमेंट्री ऑन द होल बाइबल*, न्यू वन वॉल्यूम एडिशन, एड. लेस्ली ऍफ़. चर्च (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोंडरवैन पब्लिशिंग हाउस, 1960), 140. [6]अध्याय में कई बार, प्रभु ने लोगों को धमकी दी कि "तुम्हें सातगुणी ताड़ना [और] दूंगा" (26:18, 21, 24, 28)। यह इब्रानी वाक्यांश संभवतः परमेश्वर की ताड़ना की तीव्रता का संकेत करता है, न कि ताड़नाओं की संख्या का। [7]यह सम्भव है कि "वन पशु" का उपयोग उन सभी आपदाओं के लिए है जिनके घातक परिणाम रहे होंगे: अकाल, प्राकृतिक आपदाएं, पशुओं के आक्रमण, और आवारा लोगों के आक्रमण। शायद विचार यह है कि आपदाओं का एक मेल जनसंख्या को घटा डालेगा, विशेषतः छोटे बच्चों को घात करने के द्वारा। [8]रॉय गेन, *लैव्यव्यवस्था, गिनती*, NIV एप्लीकेशन कमेंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोंडरवैन, 2004), 453. [9]उसी इब्रानी शब्द (פֶּגֶר, *पेगेर*) का प्रयोग मृत इस्राएली और उनकी निर्जीव मूर्तियों के लिए किया जाता है। ESV में एक और शाब्दिक अनुवाद मिलता है: "मैं ... तुम्हारे मृत शरीर को तुम्हारी मूर्तियों के मृत शरीर के ऊपर डालूँगा" (बल दिया गया है)। [10]तीन बिंदुओं का उपयोग करने के बजाय, जॉन एच. हेस ने पश्चाताप के पांच-बिंदु पैटर्न के साथ इस प्रश्न का उत्तर दिया: "सबसे पहले, वे अपने पापों और उनके पिताओं के पापों (आयत 39) पर हृदय से खेदित होंगे। दूसरा, वे ईश्वरीय इच्छा (आयत 40) के विपरीत चलने में परमेश्वर के विरुद्ध किए गए इन अपराधों को स्वीकार करेंगे। तीसरा, वे स्वीकार करेंगे कि परमेश्वर उनके विपरीत चला गया और उन्हें उनके शत्रुओं के देश में निर्वासन में ले लाया (आयत 41)। चौथा, जब उन्होंने इन बातों को किया है, तो वे अपने हठी हृदय को नम्र करेंगे, और पांचवां, अपने पापों के लिए क्षतिपूर्ति को तैयार होंगे, अपने निर्वासन में रहने और कष्ट सहने के द्वारा अपने पापों का प्रायश्चित करेंगे (आयतें 41, 43)" (जॉन एच. हेस, "लैव्यव्यवस्था," इन *हार्पर्स बाइबल कॉमेंटरी*, एड. जेम्स एल. मेयज [सैन फ्रांसिस्को: हार्पर एण्ड रो, 1988], 180)।

[11]CEV 26:44 के इस अनुवाद को देती है: "चाहे तुमने कुछ भी क्यों न किया हो, मैं फिर भी तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ, और मैं कभी भी तुझे पूरी तरह से अस्वीकार नहीं करूँगा या तेरे शत्रुओं के देश में तुझसे सम्पूर्ण रूप से घृणा नहीं करूँगा।" [12]इस अनुच्छेद में परमेश्वर के कथन उस समय को देख रहे थे जब इस्राएल बलवा करेगा और दासत्व में ले जाया जाएगा। उस सुविधाजनक बिंदु से, इस्राएल सीनै की वाचा को परमेश्वर और "उनके पुरखाओं" के बीच किए गए समझौते के रूप में देखेगा। [13]मूसा के माध्यम से शाब्दिक तौर पर "मूसा के हाथ के द्वारा" है। [14]टिप्पणीकारों ने अध्याय 26 को पुस्तक के अन्तिम अध्याय और अध्याय 27 को इसके परिशिष्ट के रूप में देखा है। [15]आर. लेयर्ड हैरिस, "लैव्यव्यवस्था," इन द *एक्सपोजिटर्स बाइबल कमेंट्री*, वॉल्यूम. 2, *उत्पत्ति - गिनती*, एड. फ्रैंक ई. गेबेलेन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोंडरवैन पब्लिशिंग हाउस, 1990), 648. सीएफ़. कील और एफ़, डेलीट्स्च ने कहा कि इस आयत में, "पूरी पुस्तक के निकट [निर्गमन 25] या उसके बाद की सामग्री है, हालांकि 'सीनै पर्वत में अभिव्यक्ति मुख्य रूप से [लैव्यव्यवस्था 25: 1]'" को की ओर संकेत करती है। सीएफ़. कील और एफ़. डेलीट्स्च, *द पेंटाटुएक*, वॉल्यूम., ट्रांस. जेम्स मार्टिन, बिब्लिकल कमेंट्री ऑन ओल्ड टैस्टमैंट' [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1959], 479).